चिड़िया यह नहीं जान सकी कि उस गुँजन का जो भाग उसकी समझ मे आया उसीके कारण गूँजने वाले का नाश से वंचित होना पड़ा। वह यह अच्छी तरह से जानती थी कि जो उसकी समझ मे नहीं आया उससे उसका कोई वास्ता नहीं। इसलिये वह पंख फड़फड़ाकर तीर की तरह उस मोटे कीड़े पर झपटी जो पगडंडी पर आगे बढ़ा जा रहा था।

गिरफ्तारी

प्रेसिडेण्ट मिराफ्लोर्स और उनकी साथिन की गिरफ्तारी की जो योजना बन चुकी थी, उसके असफल होने की कोई सम्भावना नहीं थी। अलाजान के बन्दरगाह पर पहरा बैठा देने के लिए डा जावाला खुद पहुँच गये थे। स्वतंत्र देशभक्त वरास पर भरोसा किया जाता था कि वह कोरालियो के मोर्चे को सम्हाल लेगा और कोरालियो के चारों ओर के प्रदेश की जिम्मेदारी खुद गुडविन ने अपने ऊपर ले ली थी।

सत्ता हड़प लेने की महत्त्वाकांक्षा रखनेवाले विरोधी राजनैतिक दल के कुछ इने गिने विश्वस्त सदस्यों के सिवाय प्रेसिडेण्ट के भागने की खबर, समुद्र किनारे के शहरों में किसी को भी नहीं थी। जावाला के साथियों ने सानमाटियो से बन्दरगाह तक आने वाली तार की लाइन को पहाड़ियो के बीच काट दिया था। इसकी मरम्मत हो सकने से पहिले और राजधानी से प्रेसिडेंट के भागने के समाचार, किनारे के शहरो तक पहुँचने से बहुत पहिले ही वह पलायनशील जोड़ी किनारे तक पहुँच जाती और उनकी गिरफ्तारी या बचाव का प्रश्न हल हो जाता।

कोरालियो की दोनो दिशाओ मे समुद्र के किनारे किनारे एक एक मील तक गुडविन ने हाथियारबन्द सन्तरियो का पहरा बिठा दिया। उन्हे रात भर सतर्कता से देखभाल करने का आदेश दिया गया जिससे मिराफ्लोर्स छिप कर किसी छोटी मोटी डोंगी से भागने की कोशिश न कर सके। कोरालियो की

गलियों में सिपाहियों के अनेक दस्ते घूम रहे थे ताकि भागा हुआ अफसर यदि वहाँ दिखाई दे तो पकड़ा जा सके।

गुडविन को पूरा विश्वास था कि जाब्ते की कोई कार्यवाही अधूरी नहीं छोड़ी गयी है। बाब अंगलहार्ट द्वारा सौंपी गयी जिम्मेदारी, व्यक्तिगत रूप से निभाने के लिए वह खुद भी, उन प्रभावशाली नामधारी सड़कों पर गश्त लगा रहा था, जो असल में घास बढ़ी हुई, तंग गलियों के अलावा और कुछ भी नहीं थी।

शहर में रात की रंगरेलियाँ आरम्भ हो चुकी थीं। सफेद जीन के कपड़े पहिने, भड़कीली नकटाइयाँ बाँधे और हाथ में बेत की छड़ियाँ घुमाते हुए कई आरामपसन्द छैले अपनी अपनी लैलाओं की तलाश में निकल पड़े थे। संगीत की आराधना करने वाले कई कलाप्रेमी बाजों से उलझ रहे थे या दरवाज़ों में खड़े खड़े गिटार की टाँग तोड़ रहे थे। बड़े बड़े, चटाई के हैट पहिने, अपनी लम्बी बन्दूकों को हाथ में भाले की तरह घुमाते, बिना जूते और बिना कोट पहिने, कुछ सिपाही इधर उधर घूम रहे थे। झाड़ियों में बड़े बड़े मेंढक कर्कश स्वर में टर्रा रहे थे। इससे कुछ आगे, जहाँ जंगल की सीमा पर पहुँच कर गलियाँ समाप्त हो जाती थीं, लुटेरे लंगूरों की चीखें और नदी के खड्डों में पड़े हुए मगरों की खखार जंगल की नीरवता भंग कर रही थी।

दस बजे तक सड़कें सुनसान हो गयीं। चौराहों पर जलते हुए तेल के मन्द प्रकाश वाले दीयों को म्युनिसिपालिटी के किसी कंजूस नौकर ने बुझा दिया था। अपना हरण करने वाले डाकुओं की गोद में आराम से सोये हुए किसी बालक की तरह, कोरालियो शहर, एक ओर ऊँचे पहाड़ों और दूसरी ओर लहराते समुद्र के बीच, नींद में बेसुध पड़ा था। उस अन्धकार के गर्त में कहीं वह महान साहसी, अपनी साथिन के साथ मंज़िल तक पहुँचने को आगे बढ़ रहा होगा; शायद अब तक वह हरे भरे मैदानों की गहराई में पहुँच चुका होगा। आँखमिचौनी का यह खेल अब जल्द ही समाप्त होने वाला था। अपनी सधी हुई चाल से गुडविन उस पड़ाव तक पहुँचा, जहाँ कोरालियो के हिस्से में आया हुआ, अन्चूरिया की सेना का दल, पाँव पसारे बेखबर सो रहा था। नौ बजे बाद किसी भी नागरिक को लड़ाई के उस किले के इतने नजदीक जाने की आज्ञा नहीं थी, परन्तु ऐसे छोटे मोटे कानूनों को गुडविन अक्सर भूल जाता था।

अपनी भारी बन्दूक से कुश्ती सी लड़ते हुए सन्तरी ने पुकारा, "कौन है?"

मुँह फेरे बिना ही गुडविन गुर्राया, "अमेरिकन" और बिना रुके आगे बढ़ गया।

वह दाँयी ओर मुड़ा, और फिर बाँये हाथ की गली से चलकर नेशनल प्लाज़ा नामक चौराहे पर पहुँच गया। गिरजेवाली गली से कुछ ही कदम दूर वह यकायक रुक गया।

काले कपड़े पहने और हाथ में एक बड़ा सा सूटकेस उठाये, किसी लम्बे मनुष्य को उसने सड़क पार कर के समुद्र तट की ओर जाते देखा। जरा ध्यान से देखते ही गुडविन को उस मनुष्य की कुहनी से सटी हुई एक स्त्री भी दिखाई दी जो इस मौन पलायन में अपने साथी की मदद नहीं तो कम से कम आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हुई प्रतीत होती थी। ये दोनों कोरालियो के निवासी तो नहीं लगते थे।

कुछ तेज चाल से गुडविन ने उनका पीछा किया जिसमें किसी जासूस के हृदय को प्रिय, कलापूर्ण हथकण्डों का सम्पूर्ण अभाव था। यह अमेरिकन इतना तगड़ा था कि उसके हृदय में जासूस का सहज ज्ञान उठ ही नहीं सकता था। वह तो अन्चूरिया की प्रजा का प्रतिनिधि मात्र था और यदि कुछ राजनैतिक कारण न होते तो वह उसी समय अपना रुपया माँग लेता। उसके दल की योजना थी कि उड़ाये हुए धन को बचा कर उसे देश के खज़ाने में लौटाया जाय और बिना रक्तपात या संघर्ष के अपने को सत्ताधीश घोषित कर लिया जाय।

अक्सटांजरो होटल के सामने वे दोनों रुके और उस आदमी ने दरवाज़ा खटखटाया। उसके रंगढ़ंग से ऐसा प्रतीत होता था कि उसे हुक्मअदूली सहन करने की आदत नहीं है। मकान मालकिन के उत्तर देने में कुछ देर हुई, लेकिन अन्त में रोशनी दिखाई दी, दरवाज़ा खुला और आगन्तुकों ने भीतर प्रवेश किया।

उस नीरव सड़क पर खड़े हुए गुडविन ने एक और सिगार सुलगायी। कुछ ही क्षणों बाद, मकान के दुमंजिले की खिड़कियों से हल्का-सा प्रकाश दिखाई दिया और गुडविन ने सोचा, "इन्होंने कमरा किराये पर लिया है। इसका मतलब यह हुआ कि अभी तक उनके भागने का इन्तजाम नहीं हुआ है।"

इतने में इस्टेवान डेलगाडो नामक एक नाई वहाँ आया जो वर्तमान सरकार का कट्टर दुश्मन था और किसी भी प्रकार के गतिरोध का मुकाबला करने को सदा तत्पर रहता था। इस नाई की गणना कोरालियो के सबसे विचित्र व्यक्तियों में की जाती थी और वह अक्सर रात को ग्यारह बारह बजे तक सड़क पर भटकता रहता था। वह स्वतंत्र पक्ष का सदस्य था और उसने गुडविन का बराबरी के भाईचारे के महत्व से अभिवादन किया। वह कुछ जरूरी बात बताना चाहता था।

षडयंत्रकारियों की प्रचलित आवाज में उसने कहा, "फ्रैंक गुडविन, तुम्हारा क्या खयाल है? मैंनें आज शाम को इस देश के प्रेसिडैण्ट की डाढ़ी बनायी है। सोचो तो, उन्होंने मुझे बुलाया। अन्धेरे में एक बुढ़िया के छोटे से मकान में वे मेरी राह देख रहे थे। माँ की कसम, इस देशके प्रेसिडैण्ट और वे यों चोरी से काम करें? मेरा खयाल है कि वे यह चाहते थे कि उन्हें कोई पहचाने नहीं। पर, किसी आदमी की दाढ़ी बनाते हुए भी उसका चेहरा न दिखाई दे, यह कैसे सम्भव है? उन्होंने मुझे एक अशर्फी इनाम दी और जबान बन्द रखने को कहा। गरज़ के समय गधे को भी बाप बनाना पड़ता है।"

गुडविन ने पूछा, "तूने इससे पहले प्रेसिडेंट मिराफ्लोर्स को कभी देखा था?"

इस्टेवान बोला, "सिर्फ एक बार। उनके बहुत घनी और काली दाढ़ी मूँछें हैं?"

"जब तुम दाढ़ी बना रहे थे, तब वहाँ और भी कोई मौजूद था?"

"हाँ, एक बुढ़िया नौकरानी थी और एक सुन्दरी। हाय राम! मैं कैसे बताऊँ कि वह कितनी सुन्दर थी!"

गुडविन बोला, "अच्छा ही हुआ, इस्टवेन। जो तुमने यह खबर मुझे सुना दी। तुम्हारी इस सेवा को नये राज्यकर्ता हमेशा याद रखेंगे।"

संक्षेप में उसने नाई को देश की वर्तमान परिस्थिति से परिचित करा दिया और उसे वहीं खड़े होकर होटल के दोनों ओर के दरवाज़ों पर नजर रखने का आदेश दिया, ताकि कोई भी व्यक्ति खिड़की से निकल कर भाग न जाय! गुडविन खुद होटल के दरवाज़े पर पहुँचा और उसे धकेल कर अन्दर घुस गया। होटल की मालकिन अपने महमानों के आराम का प्रबन्ध करके अभी नीचे उतरी थी। ताक पर मोमबत्ती जल रही थी। अपने आराम में पड़े

हुए खतरे की सान्त्वना के रूप मे वह शराब का एक छोटा सा पैग पीने की तैयारी मे थी। इस तीसरे आगन्तुक की ओर बिना किसी आश्चर्य या डर के देखती हुई वह बोली, ' आहा, महाशय गुडविन आये है ! मेरे गरीबखाने को तो इज्जत कभी कभी ही मिलती है ! "

गुडविन ने अपनी अनन्य मुस्कराहट चेहरे पर ला कर कहा, ' मुझे बहुत अक्सर आना पडेगा क्योंकि मैने सुना है कि उत्तर मे बेलीज और दक्षिण मे रायो के दरम्यान तुम्हारी शराब का कही मुकाबला नही है। अम्मा, जल्दी से बोतल निकालो—हाथ कगन को आरसी क्या ! "

बुढिया गर्व से बोली, " वाकई, शराब तो मेरी लाजबाब है। और क्यों न हो, केले के झुरमुटो मे सुनसान अँधेरी जगहो पर खूबसूरत बोतलों में तो वह पैदा होती है। और महाशय, नाविक लोग इसे रात मे ही ला सकते है, और आप पिछवाडे दरवाजे पर उसका स्वागत भी दिन उगने से पहले ही कर सकते है ! महाशय गुडविन, अच्छी शराब, बडे नाज़ और नखरो से मिलती है। "

कोरालियो में व्यापारिक स्पर्धा के बजाय तस्कर व्यापार पर ही लोगो की अधिक श्रद्धा थी। जब इस काम में सफलता प्राप्त हो जाती थी तो लोग इसका जिक्र बडे कॉइयॉपन और अभिमान से करते थे।

चॉदी का एक खनखनाता डालर गल्ले पर रखते हुए गुडविन बोला, " आज रात को तो तुम्हारे यहॉ कई महमान आये है ?

रेजगारी गिनती हुई बुढ़िया बोली, " हॉ हॉ, दो। एक सरदार, जिसकी उम्र कुछ ज्यादा नही और एक सुन्दरी, जिसके रूप का क्या वर्णन करूँ ! उनमें कुछ भी खाने पीने की इच्छा नहीं थी, इसलिए वे अपने कमरो मे चले गये। उन्होंने दो कमरे किराये लिये है—नम्बर नौ और नम्बर दस ! "

गुडविन बोला, " दरअसल, मै इन दोनों की राह देख रहा था। मुझे उनसे बहुत ही जरूरी बाते करनी है। क्या तुम मुझे उनसे मिलने की इजाजत दोगी ? "

सन्तोष की साँस लेते हुए बुढिया बोली, " क्यों नहीं, इसमे हर्ज ही क्या है ? सीधे ऊपर चले जाइये—कमरा न नौ और दस। "

गुडविन ने अपने कोट की जेब में पडी हुई अमरीकन पिस्तौल को सम्हाला और खडे जीने पर अँधेरे में ऊपर चढ़ा।

ऊपर बरामदे में लालटेन के पीले प्रकाश में उसने दरवाजों पर लिखे नम्बरों को पढ़ा। नौ नम्बर के कमरे का दरवाजा उसने धीरे से खोला और अन्दर घुस कर उसे बन्द कर दिया।

इस दरिद्र कमरे में टेबल के सामने बैठी हुई रूपसी ही यदि इज़ाबेला गिलबर्ट हो तो यह कहना पड़ेगा कि उसके रूप की अफवाहों ने उसके साथ न्याय नहीं किया। वह एक हाथ पर सिर टिकाये बैठी थी। उसके शरीर की हर रेखा से अत्यन्त थकान की उदासी झलक रही थी और उसके चेहरे पर व्याकुलता छायी हुई थी। उसकी आँखों की पुतलियाँ भूरी थीं और उसकी आँखें दुनियाँ की प्रसिद्ध सौंदर्य सम्राज्ञियों के ढाँचे में ढली हुई प्रतीत होती थीं। पुतलियों के ऊपर की स्वच्छ और उज्ज्वल चमक स्वप्निल तिरछी पलकों से ढँकी हुई थीं और पुतलियों के नीचे बर्फीली सफेदी की एक रेखा दिखाई दे रही थी। इन आँखों में कुलीनता, ओज और यदि आप कल्पना कर सकें तो एक उदात्त स्वार्थ के दर्शन हो रहे थे। उस अमेरिकन के प्रवेश करते ही उसने विस्मित और प्रश्नसूचक, पर निडर दृष्टि से ऊपर देखा।

गुडविन ने अपना हैट उतारा और अपनी अनन्य, सधी हुई बेतकल्लुफी से टेबल के कोने पर जा बैठा। उसकी उँगलियों में सुलगती हुई सिगार थी। उसने यह अनौपचारिक ढंग इसलिए अपनाया कि वह जानता था कि मिस गिलबर्ट के सामने किसी प्रकार की भूमिका बाँधने की जरूरत नहीं। वह उसके पूर्व इतिहास से परिचित था और उसमें परम्परा का क्या हिस्सा था, यह भी जानता था।

वह बोला, "श्रीमतीजी, नमस्ते! हमें एकदम मुद्दे की बात पर आ जाना चाहिये। आप देखेंगी कि मैं किसी व्यक्ति का नाम लेना नहीं चाहता, पर बगलवाले कमरे में कौन है और उसके सूट केस में क्या भरा है, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। मेरे यहाँ आने का कारण भी यही है। मैं समर्पण की शर्तों का आदेश देने आया हूँ।"

महिला न हिली, न डुली और न उसने उसकी बातों का कोई जबाब ही दिया। वह एकटक गुडविन के हाथ की सिगार को घूरती रही।

टेबल पर बैठा हुआ तानाशाह अपने हिलते पाँव के साँभर के चमड़े के जूतों को ताकता हुआ बोला, "मैं जनता के एक बड़े बहुमत की ओर से बोल रहा हूँ और उन्हीं का जो धन चुराया गया है, उसे वापिस माँगता

हूँ। इससे अधिक हमारी कोई शर्त नहीं और हमारी माँगें बिल्कुल आसान हैं। जनता के प्रतिनिधि के रूप में मैं वादा करता हूँ कि उन माँगों के पूरा होने पर आपके मार्ग में किसी प्रकार की रुकावट नहीं डाली जायगी। रुपया दे दीजिये और आप और आपके साथी जहाँ चाहें जा सकते हैं। बल्कि मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि आप जिस किसी जहाज़ से जाना चाहें, आपकी यात्रा का प्रबन्ध करवा देने में पूरी सहायता दी जायेगी। व्यक्तिगत रूप से, मैं दस नम्बर के कमरे वाले महाशय की, नारी सौन्दर्य की परख के लिए तारीफ करूँगा।"

सिगार को मुँह से लगाते हुए गुडविन ने देखा कि उसकी आँखें भी सिगार के साथ ही ऊपर उठ कर सिगार पर ही केन्द्रित हो गयी हैं। स्पष्ट था कि उसकी कही हुई एक भी बात उसने नहीं सुनी थी। अब वह समझ गया और उसने सिगार खिड़की से बाहर फेंक दी। दिलचस्पी से हँसता हुआ वह टेबल के कोने से उठ खड़ा हुआ।

रमणी बोली, "हाँ, अब बेहतर है। अब आपकी बातें सुनना संभव है। तहज़ीब का दूसरा तकाज़ा यह है कि आप मुझे बतायें कि मैं किसके द्वारा अपमानित हो रही हूँ।"

एक हाथ से टेबल का सहारा लेते हुए, गुडविन बोला, "मुझे दुख है कि मेरे पास समय इतना कम है कि उसे मैं तहज़ीब का सबक सीखने में नष्ट नहीं कर सकता। देखिये! मैं फिर एक बार आपसे समझदारी से काम लेने की प्रार्थना करता हूँ। जीवन में कई बार आपने यह प्रमाणित किया है कि आप अपने भले बुरे को अच्छी तरह समझती हैं। आपकी इस सहज प्रतिभा से लाभ उठाने का यह बहुत अच्छा मौका है। इसमें कोई भेद की बात नहीं है। मेरा नाम फ्रैंक गुडविन है और मैं रुपया लेने आया हूँ। यह तो मैं संयोग से इस कमरे में आ गया। अगर बराबर वाले कमरे में गया होता तो रुपया अब तक मुझे मिल भी जाता। आप और स्पष्ट शब्दों में सुनना चाहती हैं? दस नम्बर वाले महाशय ने बड़ा भारी विश्वास-घात किया है। उन्होंने जनता का बहुत सा रुपया गबन किया है, पर मैं उसे बचाऊँगा। वे महाशय कौन हैं इससे मुझे मतलब नहीं, परन्तु उनसे जबरदस्ती मिलने की अगर आवश्यकता पड़ी, जिसमें यह प्रमाणित हुआ कि वे राज्य के एक ऊँचे पदाधिकारी हैं तो उन्हें हिरासत में लेना मेरा कर्तव्य हो जायगा। मकान चारों तरफ से घिरा हुआ है। मैंने आपके सामने

बड़ी उदार शर्तें रखी हैं। यह भी जरूरी नहीं कि मैं बराबर के कमरे वाले महाशय से रूबरू बातें करूं। रुपयों का सूटकेस आप मुझे ला दीजिये और मामला यहीं समाप्त हो जायगा।"

महिला अपनी कुर्सी से उठ खड़ी हुई और कुछ क्षणों के लिए गहरे चिन्तन में डूबी रही। तुरन्त ही वह बोली, "आप क्या यहीं रहते हैं मिस्टर गुडविन?"

"जी हाँ।"

"क्या मैं जान सकती हूँ कि यह अनधिकार चेष्टा आप किस हैसियत से कर रहे हैं?"

"मैं जनता की सरकार का प्रतिनिधि हूँ। दस नम्बर वाले महाशय की गतिविधियों की सूचना मुझे तार से मिल चुकी है।"

"क्या मैं आपसे कुछ सवाल पूछ सकती हूँ? मेरा अन्दाज है कि आप ईमानदार तो हैं पर डरपोक नहीं। इसे क्या कहते हैं आप कोरालियो? यह किस तरह का शहर है?"

गुडविन ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "शहर तो कुछ खास नहीं—छोटा सा कस्बा है। केले की पैदावार होती है। पूरे शहर में दुमंजिले मकान पाँच सात ही होंगे। बाकी सब फूस के झोपड़े हैं। जगह की बहुत तंगी है। आबादी यहीं—वर्णसंकर स्पैनिश, लाल आदिवासी, और कुछ खानाबदोश गडरिये! कहने सुनने लायक कोई सड़क नहीं और न कोई मनोरंजन का साधन! नैतिक बन्धन अत्यन्त शिथिल, बस यही शहर का रेखाचित्र है।"

"तो फिर लोगों को यहाँ रहने का व्यापरिक या सामाजिक आकर्षण क्या है?"

मुस्कराते हुए गुडविन बोला, 'इनकी कमी नहीं। चाय पार्टियाँ नहीं, बड़े बड़े स्टोर नहीं और अमरीका के साथ फरार अभियुक्तों को वापस कर देने की संधि नहीं।"

जैसे अपने आपसे बात कर रही हो, कुछ चिड़चिड़ाहट से महिला बोली, "उन्होंने तो मुझसे कहा था कि समुद्र तट के ये शहर बहुत सुन्दर और महत्वपूर्ण हैं, जिनमें सम्भ्रान्त समाज की काफी आबादी है—विशेष तौर से संस्कृत अमरीकनों की बस्ती।"

उसके सामने विस्मित हो कर देखता हुआ गुडविन बोला, "अमरीकनों की बस्ती यहाँ है जरूर—जिनमें कुछ अच्छे भी हैं, पर अधिकांश तो

कानून के शिकंजे से बच कर भागे हुये लोग हैं। कुछ को तो मैं जानता भी हूँ—दो देश निर्वासित प्रेसिडेंट हैं बैंकों के, एक शंकास्पद आचरण का फौजी खजाञ्ची है, दो चार खूनी, और एक विधवा है जिसके सम्बन्ध में शंका का कारण संखिया था। इनके अलावा, मैं हूँ – लेकिन मैंने अभी तक, इन सब की बराबरी करने योग्य कोई अपराध नहीं किया है।"

महिला रूखाई से बोली, "उम्मीद रखिये, उम्मीद रखिये। इस समय का आपका बर्ताव ही ऐसा है कि अब अधिक समय तक आप अप्रसिद्ध नहीं रहेंगे। मुझे ठीक तो नहीं मालूम, पर कहीं न कहीं बडी भारी गलत-फहमी हो गयी है। जहाँ तक उन्हें जगाने का सवाल है, मैं आज रात को तो इसकी इजाजत नहीं दूँगी। सफर से वे बहुत थक गये हैं और अभी अभी सोये हैं। जहाँ तक मेरा खयाल है उन्होंने कपड़े भी नहीं बदले। आप रुपयों के गबन की बात कह रहे थे। मेरी समझ में कुछ नहीं आया। जरूर कोई गलती हो रही है लेकिन मैं अभी आपका भ्रम दूर कर दूँगी। आप एक मिनट यहीं ठहरें, मैं अभी वह सूटकेस आपको दिखा देती हूँ जिसे पाने को आप इतने लालायित हैं।"

दोनों कमरों के बीचवाले बन्द दरवाज़े की ओर बढ़कर वह रुक गयी। गुडविन की ओर एक गम्भीर और भेदक दृष्टि डालते हुए वह बोली, "आप मेरे कमरे में बिना इजाजत घुस आये। इस गुण्डागिरी के बर्ताव के साथ ही, आपने मुझ पर बहुत ही कमीने आक्षेप लगाये, परन्तु फिर भी—"

वह एक मिनट के लिए हिचकिचायी, मानो क्या कहना चाहती है, इसका निर्णय कर रही हो। "परन्तु फिर भी मुझे बडा आश्चर्य हो रहा है। मुझे विश्वास है कि कोई गल्ती जरूर हो रही है।"

उसने दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया पर गुडविन ने उसकी बाँह को छू कर उसे रोक लिया। हम पहले बता चुके हैं कि सडक पर लड़कियाँ उसे मुड कर देखा करती थी। वह पूर्ण पुरुष था लम्बा, चौडा, सुन्दर और सुहावनी सीमा तक जँगली! और वह थी रूप गर्विता मानिनी – भावना के अनुसार तेज या निस्तेज! यह तो मैं नहीं जानता कि हव्वा गोरी थी या श्यामा; परन्तु इतना जरूर कह सकता हूँ कि इसके जैसी औरत यदि बहिश्त के उस बगीचे में खडी होती तो मियाँ आदम ने सेब जरूर खा लिया होता। इस नारी के रूप में गुडविन की तकदीर सामने खडी थी पर उसे इस बात का होश नहीं था। परंतु होनी की पूर्व सूचना के समान, उसको सामने देखते

ही, अफवाहों में चित्रित किये गये रमणी के उस पहलू ने उसका मन कड़वाहट से भर दिया।

वह आवेश में आकर बोला, "अगर कोई गल्ती हुई है तो उसके लिए आप जिम्मेदार हैं। मैं उस आदमी को कोई दोष नहीं दे सकता, जिसे अपना देश, अपना स्वाभिमान, यहाँ तक कि गबन किये हुये रुपयों के रूप में मिलने वाला क्षणिक सन्तोष भी त्यागना पड़े। मेरी दृष्टि में तो आप दोषी हैं। भगवान की कसम, मैं अब समझ सकता हूँ कि उस बिचारे की यह दुर्दशा कैसे हुई? मुझे तो उस पर दया आती है। उन देश निष्कासित आवारों के साथ जगह जगह की धूल फाँकती हुई तुम्हारे जैसी अप्सरायें ही मनुष्य को अपना धर्म बेच कर पतन की ओर अग्रसर ..."

जैसे उसकी बातों से ऊब गई हो, उसे बीच ही में रोककर महिला बोली, "अपना भाषण चालू रखने की जरूरत नहीं। तुम क्या कह रहे हो, मैं कुछ नहीं समझती और कहाँ तुम्हारी गल्ती हो रही है, यह भी नहीं जानती। परन्तु यदि उस सूटकेस की चीजों को दिखा देने से ही तुमसे पिण्ड छूट सकता है तो उसमें एक मिनट की भी देर नहीं होगी।"

वह बिना आवाज किये, जल्दी से बराबर के कमरे में चली गयी। कुछ ही क्षणों बाद, उस भारी सूटकेस को उठा कर बाहर लायी और घृणापूर्ण सहनशीलता के भाव से उसे अमरीकन के हाथ में थमा दिया।

गुडविन ने सूटकेस को टेबल पर रखकर उसके पट्टे खोले। पास ही खड़ी वह रमणी अत्यधिक तिरस्कार और थकावट की मुद्रा से उसकी ओर घूरती रही। गुडविन ने सूटकेस को पूरा खोल कर, दो चार पहनने के कपड़े बाहर फेंके। कपड़ों के नीचे बड़ी कीमत के अमरीकन मुद्रा के नोटों के बण्डल ठसाठस भरे थे। बण्डलों के ऊपर बँधे हुये कागजों पर जो संख्याएँ लिखी हुई थीं उनसे अन्दाज किया जा सकता था कि पूरी रकम लाख डॉलर से कम नहीं होगी।

गुडविन ने महिला के मुँह पर एक उड़ती हुई नजर डाली और उसे यह देख कर विस्मय जनित आनन्द हुआ कि उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थी। उसकी आँखें फटी हुई थी, साँस फूली हुई थी और टेबल के कोने को जोर से थामे वह अपने आप को मुश्किल से सम्हाल पा रही थी। निष्कर्ष यह निकला, कि उसके साथी ने सरकारी खजाने से जो गबन किया है उसकी उसे कोई जानकारी नहीं थी। कुछ चिड़कर गुडविन ने अपने आप से पूछा कि

उसके ऊपर ऐसा कौन सा जादू चल गया जिससे वह इस लम्पट नाचनेवाली को उतना बुरा नही मान पाया जितना अफवाह उसे चित्रित करती है ?

बराबर के कमरे से आयी एक आवाज ने उन दोनो को चौका दिया। दरवाजा खुला और एक लम्बे, सॉवले, अभी अभी हजामत किये हुये आदमी ने तेजी से प्रवेश किया।

प्रोसिडेन्ट मिराफ्लोर के चित्रो मे उसे एक घनी दाढी मूँछो वाला व्यक्ति दिखाया जाता था। परतु इस्टेबन नाई के समाचार ने गुडविन को इस फक के लिए तैयार कर दिया था। आगन्तुक की आँखे नीद मे भरी हुई थी और कमरे की तेज रोशनी से चकाचौध होकर वह कुछ लडखडाया।

उसने गुडविन की ओर व्याकुलता से देखते हुए सुन्दर भाषा मे पूछा, "यह क्या हो रहा है—डकैती ?"

गुडविन बोला, "करीब करीब। पर मेरा अन्दाज है कि मै उसे रोक सकूँगा। यह धन जिन लोगो की सम्पत्ति है मै उनका प्रतिनिधि हूँ और इसे उन्ही को लौटा देने को आया हूँ।"

इतना कहते हुए उसने अपने ढीले ढाले कोट की जेब मे हाथ डाला। आगन्तुक का हाथ भी जल्दी से उसकी कमर की ओर गया परन्तु गुडविन धमकाते हुये बोला, "पिस्तौल निकालने की कोशिश मत करना। मैने जेब की पिस्तॉल से पहिले ही निशाना साध रखा है।"

वह महिला आगे बढी और अपने हिचकिचाते साथी के कन्धे पर हाथ रखती हुई, टेबल की ओर उँगली से सकेत कर के धीमे स्वर मे बोली, "मुझे सच सच बताना, यह रुपया कहाँ से आया ?"

आगन्तुक ने कोई उत्तर नही दिया। एक गहरा निश्वास छोड कर उसने अपनी साथिन के ललाट को चूमा और दो कदम पीछे हट कर दूसरे कमरे मे प्रवेश करके दरवाजा बन्द कर लिया। उसका इरादा भॉप कर गुडविन दरवाजे की ओर झपटा परन्तु दरवाजे के हैण्डल को हाथ लगाते ही पिस्तौल का धमाका सुनाई दिया। अन्दर कोई चीज जमीन पर गिरी और उसे एक ओर धकेलती हुई वह महिला बराबर वाले कमरे मे भागी।

गुडविन ने सोचा कि उस रूपसी का दर्द, धन और साथी के नष्ट हो जाने के विषाद से कही गहरा होगा, जिससे वह इस तरह उसका हाथ झटक कर भागी। बराबर के उस खून भरे, बदनाम कमरे मे वह नारी, दुनियॉ

की सबसे अधिक करुणामयी, विश्वस्त और धीरज बँधाने वाली शक्ति को सुबक सुबक कर पुकार रही थी – " हाय माँ, माँ, माँ ! "

बाहर भगदड मच चुकी थी। पहरे पर खड़े हुये उस नाई ने गोली की आवाज़ सुनते ही शोर मचा दिया और वैसे भी पिस्तौल की आवाज़ से आधा शहर जाग उठा था। सड़क पर भागते हुए लोगों की पदचाप सुनाई दी और निस्तब्ध वातावरण में सरकारी आदेश गूँजने लगे। गुडविन को अपना कर्तव्य पूरा करना था। संयोग ने उसे अपने माने हुए देश के खजाने का रक्षक बना दिया था। जल्दी से नोटों को सूटकेस में ठूँस कर उसने उसे बन्द किया और खिडकी से बाहर झुक कर आंगन में उगे हुये सन्तरे के एक घने वृक्ष पर फेंक दिया।

अपनी आदत के अनुसार कोरालियो के निवासी, हर महमान को, इस दुखपूर्ण पलायन की कहानी का अन्त सुनाते हैं। वे आप को बतायेंगे कि किस तरह खतरे की सूचना पाते ही कानून के रक्षक वहाँ दौड़े आये, किस तरह लाल जूते और वास्कट पहने, तलवार लटकाये, बन्दूकें सम्हाले सैनिकों के झुण्ड वहाँ जमा हुए, किस तरह उनके अफसर अपनी सुनहरी वर्दियाँ और तगमे सम्हालते वहाँ पहुँचे, किस तरह नंगे पाँव पुलिस के सिपाही (जो सब से अधिक योग्य थे) एकत्र हुए और किस तरह हर किस्म के नागरिकों ने वहाँ आ कर हंगामा मचाया।

वे यह भी बतायेंगे कि मृत व्यक्ति का चेहरा गोली की चोट से बुरी तरह से विक्षत हो गया था परन्तु फिर भी गुडविन और ईस्टवेन नाई ने उस पदच्युत प्रेसिडेन्ट की पहचान की। दूसरे दिन सुबह दुरुस्त की हुई तार की लाइनों से समाचार आया और राजधानी से प्रेसिडेन्ट के पलायन की खबर जनता को बतायी गयी। सान माटियो में क्रान्तिकारी दल ने बिना किसी विरोध के राजसत्ता हथिया ली और गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली प्रजा ने विजेताओं की जयजयकार करते हुए अभागे मिराफ्लोर्स की यादगार तक का नामो निशान मिटा दिया।

वे आपसे इस बात का भी जिक्र करेंगे कि किस तरह नयी सरकार के अफसरों ने अन्चूरिया का धन भरे हुये उस सूटकेस को ढूँढने के लिए जिसे फरार प्रेसिडेंट अपने साथ लाये थे, शहर का कोना कोना छान मारा, पर कोई नतीजा नहीं निकला। कोरालियो में गुडविन के नेतृत्व में

खोजियो के दल ने शहर के चप्पे चप्पे को उतनी सतर्कता से छाना जैसे कोई स्त्री अपने बालों मे कघी करती है, परन्तु खोया हुआ धन नहीं मिला।

लोगो ने मृत व्यक्ति को, बिना किसी सम्मान के, शहर से दूर दलदल को लाँघनेवाले पुल के पास दफना दिया। आज एक चवन्नी बक्शीश दो तो शहर का कोई भी लड़का उनकी कब्र आपको बता देगा। लोग कहते है कि जिसकी झोपडी मे प्रेसिडेण्ट ने उस नाई से हजामत बनवाई थी, उस बुढिया ने उनकी कब्र के सिरहाने एक लकडी का तख्ता यादगार मे लगवा दिया जिसके ऊपर गरम लोहे से लकडी को दाग कर इबारत खोदी गयी।

आप यह भी सुनेगे कि श्रीमान गुडविन ने किसी लौह पुरुष की सी शक्ति से श्रीमती इजाबेला गिल्बर्ट का उन शोकपूर्ण दिनो मे रक्षण किया। उसके पूर्व इतिहास के बारे मे उनके मन मे जो शकाएँ थीं, वे नष्ट हो गयीं। उस रूपजीविनी ने भी अपने स्वभाव की चचलता और अस्थिरता त्याग दी। शीघ्र ही उनका विवाह हो गया और वे सुख से रहने लगे।

शहर के बाहर ही छोटी-सी पहाडी पर उस अमरीकन ने एक बँगला बँधवाया। उसमे देशी लकडी पर जो कारीगरी की गयी थी, वह यदि विदेशो मे भिजवायी जा सकती, तो वह बेशकीमत मानी जाती। ईट और शीशे और बाँस और खजूर की लकडी इन से सहायता ली गयी सो अलग! बँगले के चारो ओर का प्राकृतिक सौन्दर्य नन्दनवन की याद दिलाने वाला था और उसी से मिलती जुलती शोभा अन्दर भी थी। कोरालियो के निवासी जब उस समृद्धि का वर्णन करते तो अश्चर्य से मुह फाडे रह जाते। शीशे के समान चमकते हुए फर्श, जिन पर रेशम जैसे मुलायम, हाथ से बुने हिन्दुस्तानी कालीन बिछे, ऊँचे झाड-फानूस और सुन्दर चित्र, तरह तरह के सगीत वाद्य, पच्चीकारी की हुई दीवारे। वर्णन करने वाले एक आह भर कर सिर्फ इतना कहते, "आप खुद ही साच लीजिये"।

परन्तु पूरे कोरालियो मे आपको यह कोई नही बता सकता कि फ्रेंक गुडविन द्वारा सन्तरे के वृक्ष पर फेंके गये उस खजाने का क्या हुआ? छोडिये भी इस जिक्र को। मन्द बयार में खजूर के वृक्ष लहराते हुए हमे आमोद प्रमोद के लिए आमन्त्रित कर रहे है।